बुध ग्रह की पौराणिक कथा

पुराणों में बुध के जन्म और विवाह की बड़ी विचित्र कथाएं मिलती हैं। चन्द्रमा जो मन का कारक ग्रह है, जिसने अनन्त दिशाओं से शक्ति प्राप्त करके अपनी चंचलता को बढ़ाया है, इसी कारण चन्द्रमा ने एक कुकृत्य कर डाला, वह गुरू पत्नी तारा पर आसक्त हो गया और उसे बल पूर्वक उठा कर अपने साथ ले गया और कई महीनों तक अपने साथ रखा। सभी देवी देवताओं ने इस कुकृत्य की घोर निंदा की और तारा को वापस देने के लिए दबाव बनाया, पर चन्द्रमा नही माना। सभी देवी देवताओं ने एक साथ मिलकर चन्द्रमा से युद्ध करने की घोषणा की, तो चन्द्रमा भी दैत्यों के गुरू शुक्राचार्य की शरण में चला गया। एक विशाल युद्ध की तैयारी के बाद जब ब्रह्मा जी ने बीच में हस्तक्षेप किया तो चन्द्रमा ने तारा को वापस लौटा तो दिया पर वह उस समय गर्भवती थी। बृहस्पति ने तारा को उस गर्भ को त्यागने के लिए कहा और तारा ने उस गर्भस्थ शिशु को तृणों के ढ़ेर पर गिरा दिया, जिसे बाद मे चन्द्रमा ने उठा लिया और अपनी पत्नी रोहिणी को पालन पोषण के लिए दे दिया। इस तरह बुध का जन्म हुआ। बुध के पिता हुए चन्द्रमा और माता का नाम हुआ तारा। बालक में गंभीरता, शास्त्रों मे पारंगता, बुद्धिमता, चातुर्य और वाक्पटुता आदि गुणों को देखकर ब्रह्मा जी ने ही उसका नाम बुध रखा था। इन्हीं गुणों को देखकर वैवस्वत मनु ने अपनी कन्या इला का विवाह संस्कार बुध के साथ कर दिया, जिससे बुध और इला ने एक पुत्र रत्न पुरूर्वा को जन्म दिया, जो बड़े प्रतापी राजा हुए। बुध और इला के मिलन की एक अन्य मनोरंजक कथा और भी मिलती है। इला प्रजापति कर्दम ऋषि के पुत्र थे, एक बार इला आखेट (शिकार) खेलते-खेलते अंजाने में अपने सैनिकों सहित एक ऐसे क्षेत्र में प्रवेश कर गये, जहां भगवान शंकर और माता पार्वती आनन्द मना रहे थे। उस समय वह सारा रमण क्षेत्र स्त्री लिंग में परिवर्तित हो गया था, जिसमें सभी प्राणियों सहित वृक्ष, जड़, चेतन आदि सभी को भगवान शंकर ने स्त्री रूप में परिवर्तित कर दिया और स्वयं भी स्त्री रूप हो गए, उस समय इला भी अपने सभी सैनिकों सहित एक सुन्दर स्त्री के रूप में बदल गया। इला ने

जब अपने आप को स्त्री रूप में पाया तो बहुत दुःखी हुआ और अपनी अनजाने में हो गई भूल के लिए महादेव से क्षमा याचना करने लगा, उसकी क्षमा याचना का असर महादेव पर कुछ न पड़ा, पर माता पार्वती को इला की ऐसी अवस्था देखकर उस पर दया आ गई, पार्वती जी ने इला को आशीर्वाद दिया की वह बारह महीनों में केवल एक महीने के लिए अपने असली पुरूष रूप में आ सकता है पर शेष ग्यारह महीने इसी मनोहर स्त्री रूप में ही रहना होगा और कहा कि जब वह स्त्री रूप में होगा तो पुरूष रूप की एक भी बात उसे याद नही रहेगी और जब वह पुरूष रूप में होगा तब स्त्री रूप की एक भी बात उसे याद नही रहेगी (कई अन्य कथाओं में छः महीने पुरूष और छः महीने स्त्री बताया गया है)। इतना कहकर माता पार्वती और महादेव अन्तरध्यान हो गए। इसी मनोहर स्त्री रूपी इला को जब चन्द्र पुत्र बुध ने देखा तो उस पर मोहित हो गए और उसे अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार (अंगीकार) कर लिया। गर्भधान के नौ महीनों के बाद पुत्र रत्न के रूप में पुरूर्वा का जन्म हुआ जिसने चन्द्रवंश को आगे बढ़ाया, दूसरी ओर प्रजापति कर्दम ऋषि ने अपने पुत्र को सदा के लिए नारी शरीर से मुक्ति दिलाने के लिए भगवान महादेव को प्रसन्न करने के लिए अश्वमेघ यज्ञ किया और अपने पुत्र इला को सदा के लिए पुरूष रहने का आशीर्वाद प्राप्त कर लिया।

बुध ग्रह की पौराणिक कथा का ज्योतिषीय संबंध

कुशाग्र बुद्धि होने के कारण ब्रह्मा जी ने बुध नाम रखा, इसलिए बुध बुद्धि का कारक ग्रह भी माना जाता है। ज्योतिष शास्त्र में बृहस्पति का शुक्र को शत्रु मानने का एक कारण यह भी है कि शुक्राचार्य ने युद्ध के दौरान चन्द्रमा को अपनी शरण में ले लिया था। बुध जब बड़े हुए और उन्हें अपने जन्म के विषय में चन्द्रमा के कुकृत्य के बारे में पता चला तो बुध शर्म और ग्लानि से पीड़ित रहने लगे। इसी लिए बुध सभी ग्रहों को छोड़कर केवल एकमात्र चन्द्रमा से शत्रुता रखते हैं।

बुध का सामान्यः स्वभाव शुभ है, परंतु जिन ग्रहों के साथ बैठता है या जिन ग्रहों की दृष्टि में होता है उनसे प्रभावित होकर वैसा ही फल देता है। बुध एक दिन में लगभग 64 मिनट (angle वाले मिनट) से लेकर 99 मिनट (angle वाले मिनट) चलता है। एक राशि में 27 या 30 दिन तक रहता है। बुध व्यक्ति की वाक् शक्ति को प्रभावित करता है। बुध आपकी बुद्धि और वाणी के बीच तालमेल बैठाने का कार्य करता है। यदि बुध कुण्डली में जातक के लिए शुभ है, तो जातक जीवन में आगे बढ़ता जाता है, पर यदि अशुभ है तो पीछे, मैने अनेकों कुण्डलियों में देखा है कि बुध के अशुभ और पीड़ित होने के कारण व्यक्ति अपनी बात को ठीक से व्यक्त नही कर पाता या कोशिश करने पर गलत व्यक्त कर देता है और जीवन में आगे नही बढ़ पाता, यदि बुध शुभ और बलशाली हों तो अपने मतलब की बातें करके आसानी से अपना काम निकलवा लेते हैं। आजकल तो बिना बोले काम ही नही चलता, इसलिए बुध को जन्म कुण्डली में अति आवश्यक है कि बलशाली होना चाहिए नही तो बलशाली बनाया जाए। बुध यदि बलशाली है तो जिन (कुछ विशेष तत्व) का प्रतिनिधित्व बुध करता है, उन तत्वों का लाभ हम जीवन भर उठा सकते हैं।

बुध ग्रह के कुछ अन्य ज्योतिषीय संबंध निम्न प्रकार के हैंः-

1	कारक	वाणी
2	संबंध	बंधु/ मित्र
3	स्वभाव	मिश्रित (अनेकों) (अधिकांश शांत/सौम्य)
4	गोत्र	जातमत्रि
5	दिन	बुधवार
6	वाहन	बाघ (सिंह)
7	रंग	हरा
8	दिशा	उत्तर
9	गुण (प्रकृति)	रजोगुणी

10	लिंग	नपुंसक (पुरूष)
11	वर्ण (जाति)	वैश्य/शूद्र
12	तत्व	पृथ्वी/वायु
13	स्वाद	मिश्रित (अनेकों)
14	धातु	कांस्य, पीतल
15	ऋतु	पतझड़/शरद्
16	दृष्टि विशेष	7 (पूर्ण दृष्टि)
17	भोजन	मूंग की दाल
18	शारीरिक अंग	त्वचा, मुख
19	अन्न दान	हरी मूंग (साबुत)
20	द्रव्य दान	घी
21	विंशोत्तरी महादशा	17 वर्ष
22	जप संख्या	9,000
23	रत्न	पन्ना, (संस्कृत में मर्कतमणि)
24	उपरत्न	पन्नी, संगपन्ना, मरगज
25	सहचरी	इला
26	चरादि	द्विस्वभाव
27	समिधा	अपामार्ग (चिचिड़ा)
28	बुध के मित्र ग्रह	सूर्य, शुक्र
29	बुध के सम ग्रह	मंगल, शनि, बृहस्पति, राहु, केतु
30	बुध के शत्रु ग्रह	चन्द्रमा
31	उच्च राशि	कन्या (0° से 15° तक)
32	नीच राशि	मीन (0° से 15° तक)
33	मूल त्रिकोण राशि	कन्या (15° से 20° तक)
34	स्वग्रही राशि	कन्या (21° से 30° तक)
35	राशि स्वामी	मिथुन, कन्या

36	नक्षत्र स्वामी	अश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती
37	बुध के आधी देवता	विष्णु
38	बुध के प्रत्यधि देवता	विष्णु
39	बुध ग्रह का कद	मध्यम (सामान्य)
40	बुध ग्रह शुष्कादि में	जलीय ग्रह